एक नन्ही चिड़िया का मिशन

इस वर्ष मई माह की एक सुबह — बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस के सप्ताह के दौरान — गुरुमाई जी आश्रम की एक खिड़की के पास से गुज़र रही थीं, जब उनकी नज़र खिड़की के बाहर एक नन्ही-सी चिड़िया पर पड़ी। वह चिड़िया काँच के बिल्कुल दूसरी तरफ़ स्लेट की टाइल पर बैठी हुई थी। उसका रंग भूरा था, उसके सिर पर नारंगी रंग की धारी थी और उसका पेट सफ़ेद चितकबरा था। चिड़िया ने अपना सीना फुलाया हुआ था जिसके कारण वह काफ़ी मोटी दिख रही थी।

गुरुमाई जी उस चिड़िया की ओर देख रही थीं कि यह अपने पंख फुलाकर यहाँ पर क्यों बैठी है, तभी एक पालतू बिल्ली उनके पास आकर खड़ी हो गई।

अब जब इस बिल्ली ने नन्ही चिड़िया को देखा, तो उसे *बड़ी* दिलचस्पी हुई।

उसने अपनी नाक काँच की खिड़की से सटा दी। वह चिड़िया के जितना नज़दीक हो सके, उतना नज़दीक जाना चाहती थी।

चिड़िया उस बिल्ली की उपस्थिति से बिल्कुल भी नहीं डरी। वह अभी भी काँच से बस कुछ ही इन्च दूर थी। व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखने पर आप कहेंगे कि बिल्ली और चिड़िया की नाक-से-चोंच सटी हुई थी!

दस मिनट, बीस मिनट, तीस मिनट तक चिड़िया वहीं पर बैठकर अन्दर झाँकती रही। वह बस देखती रही . . . और देखती रही . . . और देखती रही . . . गुरुमाई जी को और उस बिल्ली को। थोड़ी-थोड़ी देर में वह बहुत ज़रा-सा हिलती-डुलती। वह अपना सिर घुमाती — कभी इधर तो कभी उधर। वह गुरुमाई जी को और स्पष्टता-से देखने का प्रयास करती। वह बिल्ली को और अच्छी तरह-से देखने की कोशिश करती।

इस पूरे समय, वह चिड़िया पास, और पास आती गई। गुरुमाई जी को आश्चर्य हो रहा था कि वह चिड़िया कह रही है, “क्या आप मुझे अन्दर आने देंगी? कृपया दरवाज़ा खोलिए!”

जैसे-जैसे समय बीतता गया, गुरुमाई जी को चिड़िया की चिन्ता होने लगी। वे सोचने लगीं कि वह चिड़िया ठीक है या नहीं — क्या उसको किसी मदद की आवश्यकता है।

पैंतालीस मिनट बाद, गुरुमाई जी ने बिल्ली से कहा, "हमें चिड़िया को बता देना चाहिए कि हम उससे कितना प्रेम करते हैं।"

फिर गुरुमाई जी उस बिल्ली के साथ, खिड़की के *और* नज़दीक गईं। चिड़िया भी अपने नन्हें-नन्हें नाज़ुक क़दमों पर तेज़ी से चलकर उनकी ओर आगे बढ़ी।

और फिर वे — गुरुमाई जी, बिल्ली और चिड़िया — सचमुच बहुत नज़दीक आ गए; गुरुमाई जी ने कहा, "हम तुमसे प्रेम करते हैं।"

गुरुमाई जी के ऐसा कहते ही चिड़िया मुड़ गई; अब उसकी पीठ खिड़की की तरफ़ हो गई। उसने अनन्त नील-आकाश की ओर देखा, अपने पंख फैलाए और अपने नीचे बहती हवा का सहारा लेकर उसने खुद को ऊपर उठाया और फुर्र-से उड़ गई।

और जब चिड़िया प्रसन्नता के साथ आकाश में ऊँचा उड़ती जा रही थी तब गुरुमाई जी और बिल्ली विस्मय से उसकी ओर एकटक देख रहे थे।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।